भा वा अ शि प - वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

विश्व बाँस दिवस 2023

दिनांक : 18.09.2023

भावाअशिप – वन उत्पादकता संस्थान, राँची के निदेशक डॉ. अमित पाण्डेय के तत्पर पहल एवं समूह समन्वयक अनुसंधान डॉ. योगेश्वर मिश्रा तथा उप वन संरक्षक श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की के सक्रिय मार्गदर्शन में **विश्व बाँस दिवस 2023** के अवसर पर मिशन लाइफ के तत्वाधान में दिनांक 18.09.2023 को **"आजीविका बढ़ाने हेतु बाँस का उपयोग"** विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमे मुख्य अतिथि माननीय विधायक, मांडर विधानसभा, सुश्री शिल्पी नेहा तिर्की एवं विशिष्ट अतिथि मनरेगा आयुक्त श्रीमती राजेश्वरी बी., भा.प्र.से. उपस्थित रहीं। कार्यक्रम में सिमडेगा की जिला कल्याण पदाधिकारी श्रीमती सरस्वती कच्छप के अलावा गुमला,लातेहार,खूँटी एवं सिमडेगा जिले के 36 किसानों ने कार्यशाला का लाभ लिया।

उप वन संरक्षक श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की(भा.व.से.) के संचालन में मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, निदेशक एवं वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की गई। निदेशक डॉ. अमित पाण्डेय ने बाँस के पौधे भेंट कर मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि का स्वागत किया।

कार्यक्रम में संस्थान के वरिष्ट वैज्ञानिक डॉ. योगेश्वर मिश्रा, डॉ. अनिमेष सिन्हा, डॉ. आदित्य कुमार तथा महाराष्ट्र से श्री कांतिलाल गजमिये, श्रीमती अन्नपूर्णा धुर्वे, त्रिपुरा से श्री मन्ना रॉय तथा रॉक लाइट प्रा. लिमिटेड रांची के श्री आकाश प्रसाद ने बाँस उत्पादन, सरकारी रियायते एवं नियम, कृषि वानिकी में बाँस तथा बाँस के विभिन्न उत्पाद, उत्पाद निर्माण के तरीकों, बाज़ार एवं भविष्य आदि पर प्रशिक्षण दिया। अपने स्वागत संबोधन में निदेशक डॉ. अमित पाण्डेय ने बताया कि बाँस काष्ट के रूप में एक उत्तम विकल्प है जिससे वनों के दोहन को कम किया जा सकता है। साथ ही साथ यह रोजगार का भी उत्तम साधन हो सकता है। उन्होंने बताया कि संस्थान में पिछले कई वर्षों से बाँस पर काम हो रहा हैं। संस्थान में एक लाख से अधिक बाँस पौधे इस साल तैयार किए गए तथा 45000 के करीब वितरित भी किये गए। उत्तक संबर्धन के द्वारा भी Bamboosa asper पर कार्य किया गया है। संस्थान के पास 50 प्रजातियों की बाँस वाटिका तथा बाँस नर्सरी उपलब्ध है।

विश्व बाँस दिवस 2023

दिनांक : 18.09.2023

मनरेगा आयुक्त श्रीमती राजेश्वरी बी. भा.प्र.से. ने अपने संबोधन में बाँस पौधरोपण को मनरेगा से जोड़ने की बात कहते हुए बाँस के फायदे की चर्चा की। उन्होंने बताया कि मनरेगा द्वारा रोजगार सृजन के साथ-साथ हरियाली का भी विस्तार किया जा रहा है। उन्होंने बाँस के खाद्य पदार्थ की पौष्टिकता के विषय में बताते हुए कहा कि इसकी रोजमर्रा की चीजों से लेकर निर्माण एवं सौंदर्य सामग्री भी बनाए जा रहे हैं। मनरेगा द्वारा एक लाख एकड़ में आम रोपण की चर्चा करते हुए बताया कि यह निश्चित रूप से हरियाली मिशन को आगे बढायेगा। जल प्रबंधन की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि गाँव का पानी गाँव में, खेत का पानी खेत में का नारा साकार करना होगा। उन्होंने संस्थान की बाँस वाटिका का भी अवलोकन किया।

माननीय विधायक सुश्री नेहा शिल्पी तिर्की ने कहा कि झारखण्ड के परिपेक्ष्य में बाँस एक बहुउपयोगी प्रजाति है। बाँसकी इतनी मांग है कि हमें अधिकांश बाँस विदेशों से मंगाना पड़ता हैं इसलिए बाँसका भविष्य उज्जवल है। उन्होंने किसानों को जागरूक होकर सरकारी योजनाओं का लाभ लेने का सुझाव दिया। उन्होंने बताया कि बाज़ार की कोई कमी नही है, समूह में एवं थोक में उत्पादन करने की आवश्यकता है। संस्थान से भी आग्रह किया कि बाँस संबंधी कार्यशाला अथवा प्रशिक्षण गाँवों में जाकर की जाए तो परिणाम अच्छे होंगे। निदेशक डॉ. अमित पाण्डेय के द्वारा संस्थान की ओर से स्मृति चिन्ह देकर मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि का सम्मान किया गया।

त्रिपुरा के बाँस व्यवसायी श्री मन्ना रॉय ने बाँस ग्राम की चर्चा की एवं बताया कि यहाँ हर व्यक्ति बाँस से विभिन्न उत्पाद बनाते हैं एवं बाँससे निर्मित सामग्रियों का उपयोग करते हैं। उन्होंने बाँस के विभिन्न उत्पादों के विषय में विस्तार से बताया। डॉ. योगेश्वर मिश्रा ने बाँस प्रवर्धन एवं प्रबंधन तकनीक एवं सरकारी योजनाओं के विषय में विस्तार से बताया। डॉ. आदित्य कुमार ने बाँस को कृषि वानिकी पद्धति में लगाने के विषय में कृषकों को समझाया।

विश्व बाँस दिवस 2023

दिनांक : 18.09.2023

श्री कांतिलाल गजमिये, श्रीमती अन्नपूर्णा धुर्वे एवं श्री आकाश प्रसाद ने अपने अपने क्षेत्र में बाँस पर किये जा रहे कार्यों की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बाँस के उत्पादों के नमूने, निर्माण के तरीकों, बाज़ार भाव, शुद्ध लाभ एवं कई आर्थिक पहलुओं के बारे में विस्तार से बताया।

अंतिम सत्र में किसानों को बाँस वाटिका एवं बाँस पौधशाला का भ्रमण कराया गया एवं श्री रविशंकर प्रसाद, सूरज कुमार,श्री महेश कुमार,श्री ललन कुमार, श्री अतुल कुमार, सुश्री अंशु कुमारी आदि ने बाँस प्रजातियों एवं प्रवर्धन तकनीक की जानकारी दी। श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की भा.व.से. एवं श्रीमती रूबी सुसाना कुजूर के सहयोग से निदेशक श्री अमित पाण्डेय,चेयर ऑफ़ एक्सीलेंस श्री एच.एस.गुप्ता एवं के द्वारा किसानों को प्रमाणपत्र वितरित किया गया।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की ने बताया कि इस तरह के प्रशिक्षण को विस्तार दिया जाएगा। कार्यक्रम को सफल बनाने में विस्तार प्रभाग के श्री बी.डी.पंडित स.मु.त.अ., श्री सूरज कुमार व.त.स.,श्री विनोद राम त.स.,श्री मोहित सतपथी एम.टी.एस, सेवा एवं सुविधा के श्री निसार आलम मु.त.अ., श्री बसंत कुमार त.स., श्री मनीश कुमार, श्री अमन कुमार वर्मा, श्री बाल्मीकि पंडित, श्री टिंकू कुमार, श्री आनंद कुमार का सराहनीय योगदान रहा।